Gyanvividha, Vol.-3; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2026 : PP-01-05

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विषयों की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध-पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
Impact Factor-8.002 (SJIF)
Vol.-3; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2026
Page No.- 01-05
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. अनिल कुमार सिंह
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

2. डॉ. देवर्षि कुमार शुक्ल
शोध निर्देशक, प्राचार्य, विन्ध्य कालेज आफ एजुकेशन, सतना

Corresponding Author :

अनिल कुमार सिंह
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

वैदिक काल के शैक्षिक मूल्यों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर पड़ने वाले प्रभावों का समीक्षात्मक अध्ययन

सारांश : भारतीय शिक्षा परंपरा का विकास केवल ज्ञान के संप्रेषण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसका उद्देश्य व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करना भी रहा है। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था में गुरु–शिष्य संबंध, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, कर्तव्यबोध, नैतिकता, समग्र व्यक्तित्व विकास, व्यावहारिक ज्ञान, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को विशेष महत्व प्राप्त था। आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था में इन मूल्यों की प्रासंगिकता को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्य–आधारित शिक्षा, समग्र विकास, मातृभाषा, भारतीय भाषाओं, व्यावसायिक शिक्षा तथा अनुभवात्मक अधिगम आदि के माध्यम से नए संदर्भ में प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय जीवन में निहित शिक्षा–व्यवस्था की कल्पना करती है तथा विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, मूल्य और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने पर बल देती है। नीति में भारतीय संस्कृति और ज्ञान–परंपराओं के प्रति जुड़ाव, समग्र विकास, बहुभाषिकता, अनुभवात्मक एवं कौशल–आधारित शिक्षा तथा नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य : वैदिक काल के प्रमुख शैक्षिक मूल्यों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अभिव्यक्त शैक्षिक उद्देश्यों का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में दस्तावेजीय एवं विश्लेषणात्मक शोध–विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों शिक्षा–दृष्टियों में अनेक वैचारिक समानताएँ दिखाई देती हैं, यद्यपि आधुनिक लोकतांत्रिक, वैज्ञानिक, समावेशी और संवैधानिक संदर्भ में उनके स्वरूप एवं अनुप्रयोग में महत्वपूर्ण अंतर भी हैं।

मुख्य शब्द : वैदिक शिक्षा, शैक्षिक मूल्य, गुरु–शिष्य परंपरा, चरित्र निर्माण, मूल्य शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, समग्र शिक्षा।

प्रस्तावना : शिक्षा किसी भी समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। भारतीय संदर्भ में शिक्षा की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। वैदिक काल में शिक्षा को व्यक्ति के जीवन को व्यवस्थित, अनुशासित और उद्देश्यपूर्ण बनाने का माध्यम माना गया। गुरुकुल व्यवस्था में विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर केवल विषयगत ज्ञान ही प्राप्त नहीं करता था, बल्कि जीवन–मूल्यों, आत्मानुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यवहारिक जीवन से संबंधित प्रशिक्षण भी प्राप्त करता था। IGNOU के शैक्षिक अध्ययन–सामग्री में वैदिक शिक्षा को व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण, आत्मसंयम, सामाजिक मूल्यों तथा बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं शारीरिक विकास से संबद्ध बताया गया है। समकालीन भारत में शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रस्तुत की गई। नीति का उद्देश्य ऐसी शिक्षा–व्यवस्था विकसित करना है जो भारतीय

सांस्कृतिक एवं ज्ञान परंपराओं से जुड़ी होने के साथ–साथ आधुनिक ज्ञान, कौशल, विज्ञान, तकनीक और वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप हो।

इसी संदर्भ में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि वैदिक काल में प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में किस प्रकार पुर्नसन्दर्भीकरण हुआ है और इन दोनों के बीच किस प्रकार की समानताएँ तथा भिन्नताएँ दिखाई देती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व : वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के समक्ष केवल रोजगार और परीक्षा से संबंधित चुनौतियाँ नहीं हैं, बल्कि नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, मानसिक संतुलन, अनुशासन, सांस्कृतिक पहचान और मानवीय संवेदनशीलता से संबंधित प्रश्न भी महत्वपूर्ण हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्वयं शिक्षा को केवल सूचना एवं निर्देश तक सीमित न रखकर मूल्य, नैतिकता, कला, शारीरिक शिक्षा, जीवन–कौशल और समग्र विकास से जोड़ती है। इस दृष्टि से वैदिक शिक्षा के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह समझने में सहायता मिल सकती है कि भारतीय शिक्षा परंपरा में विकसित मूल्य आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं के साथ किस सीमा तक सार्थक संवाद स्थापित कर सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य : इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. वैदिक कालीन शिक्षा के प्रमुख शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख शैक्षिक मूल्यों एवं उद्देश्यों का विश्लेषण करना।
3. वैदिक शैक्षिक मूल्यों और NEP 2020 के बीच समानताओं का अध्ययन करना।
4. दोनों शिक्षा–दृष्टियों के बीच विद्यमान प्रमुख अंतरों का विश्लेषण करना।
5. NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य–आधारित शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
6. वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में वैदिक शैक्षिक मूल्यों की प्रासंगिकता का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
7. वैदिक मूल्यों के आधुनिक शैक्षिक संदर्भ में प्रयोग की संभावनाओं एवं चुनौतियों की पहचान करना।

शोध प्रश्न :

1. वैदिक कालीन शिक्षा के प्रमुख शैक्षिक मूल्य कौन–कौन से थे?
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में किन प्रमुख शैक्षिक मूल्यों पर बल दिया गया है?
3. वैदिक शैक्षिक मूल्यों और NEP 2020 के उद्देश्यों में किस प्रकार की समानताएँ हैं?
4. दोनों शिक्षा–दृष्टियों में कौन–कौन से महत्वपूर्ण अंतर हैं?
5. वैदिक शैक्षिक मूल्यों को वर्तमान शिक्षा में किस प्रकार प्रासंगिक बनाया जा सकता है?

शोध-विधि : प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं दस्तावेजीय शोध–विधि पर आधारित है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत–

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।
2. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय के नीति दस्तावेज।
3. वैदिक साहित्य से संबंधित मूल ग्रंथ एवं अनुवाद।
4. भारतीय शिक्षा संबंधी आधिकारिक दस्तावेज

द्वितीयक स्रोत–

1. पुस्तकें।
2. शोध–पत्र।
3. शोध–प्रबंध।
4. IGNOU की अध्ययन–सामग्री।
5. शिक्षा संबंधी शोध एवं समीक्षा साहित्य

अध्ययन में विषय-वस्तु विश्लेषण तथा तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से वैदिक शैक्षिक मूल्यों और NEP 2020 के प्रमुख प्रावधानों का अध्ययन किया गया है।

वैदिक कालीन शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ : वैदिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा को जीवन के व्यापक विकास से जोड़ा गया था। उपलब्ध शैक्षिक साहित्य में गुरुकुल को आवासीय शिक्षा का स्वरूप बताया गया है, जिसमें गुरु और शिष्य का निकट संबंध तथा विद्यार्थी के व्यक्तित्व एवं चरित्र के विकास पर बल था।

गुरु–शिष्य संबंध : गुरु को केवल विषय पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं बल्कि विद्यार्थी के जीवन का मार्गदर्शक माना जाता था। विद्यार्थी गुरु के निकट रहकर शिक्षा प्राप्त करता था। इससे शिक्षण प्रक्रिया में व्यक्तिगत मार्गदर्शन और अनुशासन का महत्व बढ़ जाता था।

चरित्र निर्माण : वैदिक शिक्षा में चरित्र निर्माण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। सत्य, संयम, अनुशासन, कर्तव्य, विनम्रता, सेवा और आत्मनियंत्रण जैसे गुणों के विकास पर बल दिया जाता था।

समग्र व्यक्तित्व विकास : वैदिक शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं थी। शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास को शिक्षा का अंग माना गया। वैदिक शिक्षा संबंधी IGNOU सामग्री में व्यक्तित्व–विकास, व्यावहारिक ज्ञान, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा शारीरिक विकास जैसे आयामों का उल्लेख मिलता है।

आत्मानुशासन एवं आत्मनिर्भरता : गुरुकुल जीवन में विद्यार्थी को अनुशासित जीवन, आत्मसंयम तथा आत्मनिर्भरता के लिए तैयार किया जाता था। इस प्रकार शिक्षा को जीवन–व्यवहार से जोड़ा गया था।

व्यावहारिक एवं कौशल आधारित शिक्षा : वैदिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों के साथ कृषि, पशुपालन, आयुर्वेद, शारीरिक शिक्षा आदि से संबंधित ज्ञान का भी उल्लेख मिलता है।

भाषा एवं मौखिक परंपरा : ज्ञान के संरक्षण एवं संप्रेषण में श्रवण, मनन और चिंतन जैसी प्रक्रियाओं का महत्व था। मौखिक परंपरा वैदिक ज्ञान–संरक्षण का प्रमुख माध्यम रही।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ : NEP 2020 का उद्देश्य भारतीय संदर्भ में ऐसी शिक्षा प्रणालीविकसित करना है जो ज्ञान, कौशल, मूल्यों और उत्तरदायित्व का समन्वय करे। नीति में भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान–परंपराओं से जुड़ाव तथा समग्र विकास पर बल दिया गया है।

प्रमुख विशेषताएँ :

1. 5+3+3+4 की नई शैक्षिक संरचना।
2. समग्र विकास।
3. बहुविषयक शिक्षा।
4. अनुभवात्मक एवं गतिविधि–आधारित अधिगम।
5. व्यावसायिक शिक्षा।
6. मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं पर बल।
7. भारतीय ज्ञान प्रणाली।
8. मूल्य एवं नैतिक शिक्षा।
9. कौशल विकास।
10. आलोचनात्मक चिंतन एवं समस्या समाधान।
11. समावेशी शिक्षा।
12. शिक्षक की भूमिका एवं सतत व्यावसायिक विकास

NEP 2020 में जहाँ संभव हो, कम–से–कम कक्षा 5 तक और वरीयता से कक्षा 8 तथा आगे तक मातृभाषा/स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में अपनाने की अनुशंसा की गई है।

वैदिक शैक्षिक मूल्यों एवं NEP 2020 का तुलनात्मक अध्ययन :

गुरु–शिष्य संबंध : शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका एवं शिक्षक प्रशिक्षण आधुनिक व्यवस्था में संबंध अधिक संस्थागत है

चरित्र निर्माण, मूल्य एवं नैतिक शिक्षा : दोनों में व्यक्तित्व के नैतिक पक्ष पर बल समग्र विकास (Holistic Development) स्पष्ट वैचारिक साम्य दिखाई देता है–

- आत्मानुशासन।
- जीवन–कौशल एवं मूल्य शिक्षा।
- आधुनिक संदर्भ में नए रूप में प्रयोग।
- व्यावहारिक ज्ञान (Vocational Education & EÛperiential Learning) व्यावहारिकता पर दोनों में बल।
- भारतीय ज्ञान परंपरा Indian Knowledge Systems NEP में भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थान मातृभाषा/भारतीय भाषाएँ (Mother Tongue/Regional Languages)।
- भाषा संबंधी दृष्टि में महत्वपूर्ण समानता।

प्रकृति से संबंध : पर्यावरणीय जागरूकता एवं सतत विकास। आधुनिक पर्यावरणीय संदर्भ में पुर्नव्याख्या आवश्यक है।

शारीरिक विकास (Physical Education) : दोनों में शारीरिक विकास का महत्व है।

सामाजिक उत्तरदायित्व : **(Constitutional Values & Responsible Citizenship)** :

आधुनिक लोकतांत्रिक संदर्भ में विस्तारित रूप यह तालिका वैचारिक समानताओं को दर्शाती है। इससे यह प्रमाण नहीं माना जाना चाहिए कि NEP 2020 के प्रत्येक प्रावधान का प्रत्यक्ष स्रोत वैदिक शिक्षा है।

वैदिक मूल्यों का NEP 2020 पर प्रभाव/ समीक्षात्मक विश्लेषण : यहाँ "प्रभाव" को प्रत्यक्ष ऐतिहासिक कारण–परिणाम के अर्थ में नहीं, बल्कि वैचारिक समानता, भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्संदर्भीकरण और नीति में दिखाई देने वाली शैक्षिक निरंतरताओं के अर्थ में समझना अधिक उचित है।

समग्र शिक्षा : वैदिक शिक्षा में विद्यार्थी के विभिन्न पक्षों के विकास पर बल मिलता है। NEP 2020 भी शिक्षा को केवल परीक्षा और विषयगत ज्ञान तक सीमित न रखकर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास से जोड़ती

है। नीति में कला, खेल, व्यावसायिक शिक्षा और अन्य क्षेत्रों के बीच कठोर विभाजन को कम करने की बात कही गई है।

मूल्य-आधारित शिक्षा : वैदिक शिक्षा में नैतिकता एवं चरित्र निर्माण प्रमुख तत्व रहे हैं। NEP 2020 भी विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों, उत्तरदायित्व, मानवीय मूल्यों तथा नैतिक दृष्टि के विकास पर बल देती है। हालाँकि आधुनिक शिक्षा में इन मूल्यों का आधार केवल धार्मिक या पारंपरिक नहीं बल्कि संवैधानिक, लोकतांत्रिक और मानवाधिकारपरक भी है। इसलिए वैदिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षा में लागू करते समय उनका समावेशी एवं संवैधानिक पुनर्पाठ आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान परंपरा : NEP 2020 भारतीय ज्ञान, संस्कृति और परंपराओं से शिक्षा को जोड़ने की स्पष्ट दिशा प्रस्तुत करती है। आधिकारिक दस्तावेज में भारतीय ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं के प्रति जुड़ावको नीति की दृष्टि का हिस्सा बताया गया है।

इस संदर्भ में वैदिक साहित्य और भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े विषयों का शैक्षिक अध्ययन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनता है।

भाषा एवं मातृभाषा : वैदिक शिक्षा में संस्कृत तथा मौखिक ज्ञान–संप्रेषण की महत्वपूर्ण भूमिका थी। NEP 2020 आधुनिक संदर्भ में मातृभाषा, स्थानीय भाषा और भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्रारंभिक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है।

इस प्रकार भाषा के संदर्भ में वैदिक परंपरा और आधुनिक नीति के बीच एक वैचारिक समानता देखी जा सकती है, लेकिन दोनों के ऐतिहासिक एवं सामाजिक संदर्भ अलग हैं।

अनुभवात्मक एवं व्यावहारिक शिक्षा : गुरुकुल व्यवस्था में शिक्षा जीवन और व्यवहार से जुड़ी हुई थी। NEP 2020 में भी अनुभवात्मक, गतिविधि–आधारित और कौशल–आधारित शिक्षा को महत्व दिया गया है। शिक्षा मंत्रालय ने NEP के अंतर्गत खिलौना–आधारित और अनुभवात्मक अधिगम जैसी पहलों का भी उल्लेख किया है।

दोनों शिक्षा-दृष्टियों में प्रमुख अंतर : समानताओं के बावजूद वैदिक शिक्षा और NEP 2020 को समान व्यवस्था मानना उचित नहीं होगा।

1. वैदिक शिक्षा विशिष्ट ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक संदर्भ में विकसित हुई थी, जबकि NEP 2020 आधुनिक लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा–व्यवस्था के लिए बनाई गई नीति है।
2. आधुनिक शिक्षा में समानता, समावेशन, लैंगिक समानता, दिव्यांग विद्यार्थियों की भागीदारी, संवैधानिक मूल्य और सार्वभौमिक शैक्षिक अधिकार महत्वपूर्ण आधार हैं।
3. आधुनिक शिक्षा में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, डिजिटल शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैश्विक नागरिकता और रोजगार–कौशल जैसे आयाम भी महत्वपूर्ण हैं।

अतः वैदिक मूल्यों को वर्तमान शिक्षा में अपनाने का अर्थ प्राचीन शिक्षा–व्यवस्था की हूबहू पुर्नस्थापना नहीं, बल्कि उपयोगी मूल्यों का आधुनिक संदर्भ में पुर्नव्याख्यायित एवं समावेशी प्रयोग होना चाहिए।

वर्तमान शिक्षा में वैदिक शैक्षिक मूल्यों की प्रासंगिकता : वैदिक परंपरा से जुड़े कुछ मूल्यों को आधुनिक शिक्षा में निम्न प्रकार से उपयोगी बनाया जा सकता है–

1. चरित्र निर्माण को जीवन–कौशल एवं नैतिक शिक्षा से जोड़ना।
2. गुरु–शिष्य संबंध को शिक्षक–विद्यार्थी mentoring के आधुनिक स्वरूप में विकसित करना।
3. आत्मानुशासन को self&regulated learning से जोड़ना।
4. व्यावहारिक ज्ञान को vocational &Ûperiential learning से जोड़ना।
5. प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता को environmental education से जोड़ना।
6. भारतीय भाषाओं को बहुभाषिक शिक्षा के साथ जोड़ना।
7. भारतीय ज्ञान परंपरा का आलोचनात्मक एवं प्रमाण–आधारित अध्ययन करना।
8. समग्र विकास में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं बौद्धिक विकास का समन्वय करना।

प्रमुख चुनौतियाँ : वैदिक शैक्षिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षा में लागू करने में कुछ चुनौतियाँ भी हैं–

1. प्राचीन ग्रंथों की व्याख्या में ऐतिहासिक संदर्भों की उपेक्षा।
2. परंपरागत अवधारणाओं का आधुनिक संदर्भ में यथार्थ पुनर्पाठ।
3. मूल्य शिक्षा और धार्मिक शिक्षा के बीच स्पष्ट अंतर बनाए रखना।
4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं प्रमाण–आधारित शिक्षा को बनाए रखना।
5. विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक समूहों के लिए समावेशी दृष्टिकोण सुनिश्चित करना।
6. प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता।
7. भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित प्रमाणिक और गुणवत्तापूर्ण अध्ययन–सामग्री का विकास।

निष्कर्ष : अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि वैदिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच अनेक शैक्षिक उद्देश्यों में वैचारिक साम्य दिखाई देता है। विशेष रूप से समग्र व्यक्तित्व विकास, मूल्य–आधारित शिक्षा चरित्र निर्माण, व्यावहारिक एवं कौशल–आधारित शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा तथा भारतीय भाषाओं के महत्व जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण समानताएँ दिखाई देती हैं।

NEP 2020 भारतीय ज्ञान एवं सांस्कृतिक परंपराओं को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने का प्रयास करती है। नीति का उद्देश्य भारतीय ethos से जुड़ी ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, मूल्य और उत्तरदायित्व विकसित करे।

फिर भी यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा कि NEP 2020 केवल वैदिक शिक्षा से प्रभावित नीति है। नीति के निर्माण में आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं, वैश्विक संदर्भ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवैधानिक मूल्यों, कौशल विकास, समावेशन और 21वीं सदी की आवश्यकताओं को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

अतः वैदिक शैक्षिक मूल्यों की समकालीन उपयोगिता इस बात में है कि उनके मानवीय, नैतिक, अनुशासनात्मक और समग्र विकास संबंधी पक्षों का आलोचनात्मक एवं वैज्ञानिक पुनर्पाठ किया जाए और उन्हें आधुनिक लोकतांत्रिक एवं समावेशी शिक्षा के अनुरूप लागू किया जाए।

सुझाव :

1. विद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा पर प्रमाण–आधारित पाठ्यक्रम विकसित किए जाएँ।
2. मूल्य शिक्षा को व्यवहारिक गतिविधियों एवं जीवन–कौशल से जोड़ा जाए।
3. शिक्षक–विद्यार्थी mentoring व्यवस्था को मजबूत किया जाए।
4. भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री विकसित की जाए।
5. वैदिक शिक्षा संबंधी सामग्री का आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन कराया जाए।
6. भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान के बीच संवाद को प्रोत्साहित किया जाए।
7. अनुभवात्मक, कौशल–आधारित और बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
8. प्राचीन शैक्षिक मूल्यों को लागू करते समय संविधान, समानता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समावेशन के सिद्धांतों को आधार बनाया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.।
2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दृष्टि एवं मुख्य विशेषताएँ. नई दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.।
3. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020) एन.ई.पी. 2020 की प्रमुख पहले नई दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.।
4. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2020) शिक्षा की अवधारणा एवं प्रकृति, वैदिक संस्कृति और शिक्षा प्रणाली. इग्नू ई–ज्ञानकोश।
5. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2020) शिक्षा और मीडिया, प्राचीन, वैदिक काल के दौरान शिक्षा. इग्नू ई–ज्ञानकोश।
6. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2020) शिक्षा का ऐतिहासिक विकास, एक विहंगम दृष्टि. इग्नू ई–ज्ञानकोश।
7. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2020) शिक्षा इसके आधार, ब्राह्मणवादी शिक्षा. इग्नू ई–ज्ञानकोश।

•